अरदास की संरचना

-स. गुरचरन सिंह गिल

शब्द 'अरदास' का प्रयोग सिख-प्रार्थना के संदर्भ में होता है, जोकि किसी विशिष्ट कार्य को करने से पहले या बाद में की जाती है या नितनेम अन्तर्गत गुरबाणी सिमरन के बाद में सम्पन्न होती है या 'पाठ' की सेवा समाप्ति पर होती है या 'कीर्तन गायन' अथवा किसी धार्मिक समागम के अन्त में की जाती है।

दसम् गुरु परम्परा में, अरदास भोजन से पहले या बाद में की जाती है। अरदास परमेश्वर, अकाल पुरख या वाहिगुरु के समक्ष सहायक होने की प्रार्थना हेतु अथवा भक्त की इच्छानुरूप कुछ मांगने की प्रार्थना भी हो सकती है। अरदास सदैव हाथ जोड़कर की जाती है।

अरदास की रहत के अनुशासन को सिखों में दसम् गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा परिपक्व कराया गया। सामान्यता अरदास के अन्त में इस प्रकार की विनती होती है-

- शब्द 'वाहिगुरु'-'हे वाहिगुरु, मेरे.....इस प्रारम्भ किये कारज में सहायक हों।' यह कोई नया कार्य प्रारम्भ से पूर्व की जाने वाली अरदास का भाग है।
- शब्द 'अकालपुरख'-'हे अकालपुरख, शबद् गायन समापन पर शुकराने की अरदास, आप सदैव स्मरण में रहें-इसकी अरदास।'

अरदास पूर्णत: गुरु साहिबानों द्वारा नहीं लिखी गई है। अरदास के मूल आलेख में कुछ गुरबाणी भी सम्मलित है। अरदास की प्राथमिक रचना 'वार श्री भगौती जी की पातशाही दसवीं' दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा रचित है। यह रचना मूलत: 'श्री दशम् ग्रंथ' का भाग है।

एक एकल अरदास अनन्त ऊर्जा की प्राप्ति होती है। 'प्रथम भगौती सिमर के गुरुनानक लई धिआये....' से लेकर 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणें सरबत दा भला' तक अरदास की रचना को समझना महत्वपूर्ण है। क्योंकि अरदास में बहुत से महापुरुषों एवं पवित्र मानव-मूल्यों का जिक्र है। यह एक ऐसी वैज्ञानिक प्रार्थना है, जिससे मानवीय आवेग, मन, मस्तिष्क को आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

अरदास के संदर्भ में हम देखते हैं-

- यह प्रार्थना है, प्रभु के समक्ष। प्रभु-ब्रह्माण्ड की संरचना करने वाली दयावान शक्ति है।
- यह अहम् भाव को कम करती है, मन को शान्ति प्रदान करती है।
- अरदास नम्रता, मृदुलता, दया, सेवा भाव, निर्भीकता और चढ़दी कला का भाव सिखाती है।
- अरदास यह स्मरण कराती है कि श्रेष्ठ मानव बहुत अधिक प्रतिबद्ध व्यक्तित्व होता है।
- अरदास अन्तर्मन को शक्ति व ऊर्जा प्रदान करती है।
- अरदास मन को पवित्र महापुरुषों से साक्षात्कार कराती है, जोड़ती है।
- अरदास व्यक्ति के आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा करती है, आत्मविश्वास प्रदान करती है।
- अरदास संगठन का भाव उत्पन्न करती है।
- अरदास करते समय, संगत में उपस्थित सभी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की ओर सम्मुख होकर हाथ जोड़े खड़े होते हैं। अरदास करते समय, एक समयावर्ती के बाद संगत 'वाहिगुरु' का घोष करती हैं। अरदास समाप्ति पर, संगत माथा टेकती है।

'वाहिगुरुजी का खालसा-वाहिगुरुजी की फतेह' का जयकारा लगाया जाता है।

अरदास के तीन भाग

प्रथम भाग-अरदास के पहले भाग में, सर्वशक्तिमान -परमात्मा अथवा भगौती को सर्वप्रथम स्मरण कर गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास जी जो सदैव सहायक है, को याद किया जाता है। इसके बाद गुरु अर्जुनदेव जी, गुरु हरगोबिन्द जी, गुरु हरराय जी के सिमरन की बाद कही गई हैं। गुरु हरिकृष्ण जी का ध्यान करने का विषय आता है, जिससे सब दुख समाप्त हो जाते हैं। गुरु तेगबहादुर जी के स्मरण का विषय भी है, जिनके द्वारा 9 प्रकार की निधियां प्राप्त होती है। अमृत के दाते, सर्वंशदानी, खालसा पंथ के सृजनहार गुरु गोबिन्द सिंह जी का भी स्मरण होता है, जिनसे सबकी रक्षा होती है।

द्वितीय भाग-अरदास के दूसरे भाग में विभिन्न सिखों द्वारा दिए गए ऐतिहासिक बलिदानों का बखान है। इनमें बाल सिखों से लेकर प्रौढ़ सिखों तक, स्त्रियों व पुरुषों दोनों का वर्णन मिलता है। अरदास में, उन सिख स्त्री-पुरुष महापुरुषों को याद किया जाता है, जिन्होंने धर्म नहीं हारा और सभी सामान्य जनों की धार्मिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए अपना शीश न्यौछावर किया, अपने को टुकड़े-टुकड़े करवाना स्वीकार किया, बंद-बंद कटवा दिए, खोपड़ी को उतरवा दिया, आरे वाली चरखड़ी पर चढ़ना कबूल किया, असहनीय प्रताड़ना व आतंक को बर्दाश्त किया। ऐसे शहीदों को याद किया गया, जो अपने

विश्वास पर दृढ़ रहे और सिख-रहत अनुसार जीवन जीया। केसों को सदा श्वास-श्वास धारण करने वाली महान सिखों का स्मरण किया गया। अरदास ने, हम गुरसिख महानुभावों को भी आदरपूर्वक याद करते हैं, जिन्होंने गुरुद्वारों की रक्षा या सेवा में अहिंसक आन्दोलन की और बुरी तरह प्रताड़ित किए गए या जिन्दा जलाए व उबाले गए और पीड़ा में कराहें तक नहीं। ऐसे सेवक, सिखों का गुरु पर पूर्ण आस्था थी और उनके समक्ष स्वयं को समर्पित किया। 'इन सबकी कुर्बानियों को स्मरण करके' खालसा जी, बोलो जी ..... वाहिगुरु।'

तृतीय भाग-अरदास के तीसरे भाग की रचना में स्थिति व समय के अनुसार परिवर्तन हो सकता है। अत: यह आलेख स्थायी नहीं है। अरदास के इस भाग में अरदास करने वाला स्पष्ट करता है कि वह किस कारण या निमित अरदास कर रहा हैं और यह वाहिगुरु को सम्बोधित कर बताया जाता है। यह भाग स्थायी न होने के बावजूद, सभी स्थितियों पर बोले जाने वाले वाक्य पहले से ही तय हैं, जो संगत द्वारा परवान हैं। नए प्रकार के मनगढ़ंत वाक्यों से गुरेज किया जाता है। अन्त में, कार्यक्रम या समागम दौरान की गई भूलों की क्षमा याचना भी की जाती है, जोकि शबद् गायन, पाठ उच्चारण, व्याख्या के दौरान हो सकती है।

अरदास के अन्त में **कड़ाह प्रशाद दी देग** और **गुरु के लंगर** के हाजिर होने का उल्लेख है। उसके वितरण की आज्ञा श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के समक्ष मांगी जाती है। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के हुक्म से प्राप्त आशीर्वाद का विषय अरदास में आता है। अपने पापों, भूलों और त्रुटियों की क्षमा मांगी जाती है।

अरदास का अन्तिम वाक्य सारी संगत एक साथ उच्चारित करती है, वह वैश्विक बंधुत्व का परिचायक है। वह है-

नानक नाम चढ़दी गला। तेरे भाणें सरबद दा भला।।

जब श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है या श्री गुरुग्रंथ साहिब जी से हुक्म लेना होता है, तो अरदास होती है। अखण्ड पाठ के समय प्रारम्भ में, मध्य में व समाप्ति पर अरदास होती है। तीनों बार **कड़ाह प्रशाद दी देग** संगत में वितरण हेतु हाजिर की जाती है।

नामकरण संस्कार के अन्त में, सगाई व आनन्द कारज (विवाह) के अवसर पर अरदास की जाती है। शमशान भूमि में अन्तिम संस्कार के समय अरदास होती है। यात्रा, विद्यालय जाने, परीक्षा में बैठने, युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करने से पूर्व, गृहस्थ जीवन के विभिन्न कारजों को सम्पन्न कराने के अवसरों पर अरदास का आयोजन होता है। **खण्डे की पाहुल** छककर अमृतधारी बनने की रहत-मर्यादा में अरदास करने का विशिष्ट महत्व है। तब पंज प्यारों की उपस्थिति में श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के समक्ष अरदास होती है।

जब श्री गुरुग्रंथ साहिब जी सामने प्रत्यक्ष नहीं भी होते, तो भी हाथ जोड़कर किसी भी दिशा की ओर मुख करके खड़े होकर अरदास की जाती है। अरदास अकेले भी हो सकती है और संगत के साथ भी। अरदास सम्पूर्ण विश्व के भले का आह्वान करने का आध्यात्मिक नाद है-**सरबत दा भला**। ●

भट साहिबान और गुरु आगे अरदास

कभी राजप्रासादों में राजाओं की चारण-वन्दना करने वाले जब आध्यात्मिक जगत में आए, तो गुरु साहिबानों और ईश्वर की स्तुति-वन्दना करने लगे। इस प्रकार के महापुरुषों में कश्मीरी पंडितों में से भट साहिबान नाम से मशहूर हुए महापुरुष भी है। ग्यारह ऐतिहासिक भट साहिबानों की बाणी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में दर्ज है। इनका नाम भट कल्सहार जी, जालप जी, कीरत जी, भीखा जी, सलह जी, नलह जी, भलह जी, गयन्द जी, मथुरा जी, बलह जी और हरबंस जी है।

अरदास विषय पर भट कीरत जी के दो शब्द् श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में अंकित है। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के अंग 1406 पर भट कीरत जी का शबद है-

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई।। माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई।

इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई। इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई।।४।।५८।।

भट कीरत जी की एक अन्य रचना श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में अंकित है। अंग 1395 का यह शबद् सच्चे गुरसिख के मनोभावों का प्रगटीकरण है। गुरसिख की अरदास के नम्रता वाले शब्दों की योजना-रचना का सुमेल इस शबद् में दिखाई देता है- **चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ।। सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ।।**